National Research Journal of Human Resource Management
Volume No: 12, Issue No: 2, Year: 2025 (July-December)
PP: 376-389
ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

श्रीलंका में भारतीय सहायता और निवेश: 2022 संकट के बाद ऊर्जा, डिजिटलीकरण और स्वास्थ्य क्षेत्र में परियोजनाओं का विश्लेषण

देवेंद्र कुमार

शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग,

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, (बिहार)

सारांश

वर्ष 2022 में श्रीलंका का आर्थिक संकट केवल ऋण, राजकोषीय असंतुलन या विनिमय दर की समस्या नहीं था। यह एक व्यापक संकट था, जिसमें विदेशी मुद्रा की भारी कमी, आयात में रुकावट, ईंधन और बिजली का अभाव, दवाइयों की कमी तथा सरकारी सेवाओं की क्षमता में गिरावट एक साथ दिखाई दी। इस स्थिति में भारत ने त्वरित सहायता देकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। करेंसी स्वैप, एशियन क्लियरिंग यूनियन (ACU) भुगतान में स्थगन, ईंधन के लिए ऋण सुविधा, तथा भोजन, दवाइयों और अन्य आवश्यक वस्तुओं के लिए क्रेडिट सहायता ने अल्पकाल में श्रीलंका को राहत दी और आपूर्ति व्यवस्था को कुछ हद तक स्थिर रखा। संकट के बाद भारत–श्रीलंका सहयोग का स्वरूप धीरे-धीरे राहत से आगे बढ़कर परियोजना-आधारित निवेश और संस्थागत क्षमता-निर्माण की दिशा में विकसित हुआ। ऊर्जा क्षेत्र में द्वीपीय हाइब्रिड परियोजनाएँ, ग्रिड-स्तरीय सौर परियोजनाएँ और पेट्रोलियम भंडारण जैसी पहलें ऊर्जा सुरक्षा और आपूर्ति-विश्वसनीयता को मजबूत करती हैं। डिजिटलीकरण के क्षेत्र में UPI जैसी भुगतान प्रणालियाँ और डिजिटल पहचान परियोजनाएँ लेन-देन की लागत घटाने, पर्यटन और छोटे व्यापार को औपचारिक बनाने तथा लक्षित सेवा-वितरण को संभव बनाने की क्षमता रखती हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में औषधि सहायता और आपातकालीन सहयोग ने मानवीय सुरक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य तंत्र को सहारा दिया। यह शोधपत्र 2022 के बाद भारत–श्रीलंका आर्थिक सहयोग को "तात्कालिक स्थिरीकरण से दीर्घकालिक क्षमता-निर्माण" की प्रक्रिया के रूप में देखता है। इसमें ऊर्जा, डिजिटलीकरण और स्वास्थ्य के तीन प्रमुख क्षेत्रों का परियोजना-स्तरीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है और विश्वसनीय स्रोतों पर आधारित सारणियों की सहायता से निष्कर्ष विकसित किए गए हैं।

की-वर्ड्स: भारत–श्रीलंका, 2022 संकट, ऊर्जा सुरक्षा, UPI, डिजिटल पहचान (SLUDI), विकास साझेदारी, स्वास्थ्य आपूर्ति, निवेश-राजनीति

1. परिचय

श्रीलंका का 2022 का संकट एशिया के हाल के इतिहास में एक गंभीर उदाहरण के रूप में सामने आया, जहाँ व्यापक आर्थिक अस्थिरता और आवश्यक सार्वजनिक

© Copyright @ Authors

ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

सेवाओं की विफलता एक साथ दिखाई दी। विश्व बैंक के अनुसार 2021 से 2023 के बीच श्रीलंका की अर्थव्यवस्था में 9.5% का संचयी संकुचन दर्ज हुआ। संकट की तीव्रता का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि 2022 में उपयोगी विदेशी मुद्रा भंडार आयात के केवल 0.3 महीनों तक सीमित रह गया और सितंबर 2022 में मुद्रास्फीति 69.8% तक पहुँच गई [1]। श्रीलंका के केंद्रीय बैंक ने भी सितंबर 2022 के लिए यही मुद्रास्फीति दर दर्ज की थी [2]।

इसके बाद 2023 में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के विस्तारित फंड सुविधा कार्यक्रम ने आर्थिक स्थिरीकरण की दिशा में कुछ आधार तैयार किया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत राजकोषीय सुधार, नीतिगत संयम और संरचनात्मक परिवर्तन पर बल दिया गया [3]।

ऐसे संकट में बाहरी सहायता का महत्व केवल वित्तीय सहायता तक सीमित नहीं रहता। इसका सीधा संबंध ईंधन, दवाइयों और अन्य आवश्यक आयातों की उपलब्धता, भुगतान-व्यवस्था की निरंतरता तथा राज्य की सामाजिक-प्रशासनिक क्षमता से होता है। इसी संदर्भ में भारत की 2022 की सहायता अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही। भारत ने जनवरी 2022 में US$ 400 मिलियन का करेंसी स्वैप, लगभग US$ 2 बिलियन का ACU सेटलमेंट डिफरल, ईंधन के लिए US$ 500 मिलियन की लाइन ऑफ क्रेडिट, तथा भोजन, दवाओं और अन्य आवश्यक वस्तुओं के लिए US$ 1 बिलियन की क्रेडिट सुविधा उपलब्ध कराई [4]।

यह सहायता तत्काल संकट-प्रबंधन के लिए थी, लेकिन 2023 से 2025 के बीच भारत–श्रीलंका सहयोग का स्वरूप और व्यापक हुआ। ऊर्जा क्षेत्र में द्वीपीय हाइब्रिड पावर परियोजनाएँ और सौर ऊर्जा निवेश सामने आए [5], [6]। डिजिटलीकरण के क्षेत्र में UPI भुगतान प्रणाली लागू हुई [7], [8]। स्वास्थ्य क्षेत्र में दवा-सहायता और अस्पतालों की आवश्यकताओं के लिए भारतीय सहयोग जारी रहा [9]।

इस शोधपत्र का उद्देश्य इसी परिवर्तन को समझना है। राजनीतिक विज्ञान के दृष्टिकोण से प्रश्न यह है कि संकट-कालीन सहायता किस प्रकार बाद में परियोजना-आधारित आर्थिक सहयोग में बदलती है, और यह प्रक्रिया श्रीलंका की घरेलू राजनीति, आर्थिक स्थिरीकरण और निवेश शासन से कैसे जुड़ती है।

2. साहित्य समीक्षा और विश्लेषणात्मक ढाँचा

संकट-अर्थशास्त्र (2023) का साहित्य यह बताता है कि आयात-निर्भर अर्थव्यवस्थाओं में विदेशी मुद्रा संकट का पहला और गहरा प्रभाव ऊर्जा, स्वास्थ्य और खाद्य जैसी आवश्यक सेवाओं पर पड़ता है। जब राज्य आवश्यक आयातों का भुगतान नहीं कर पाता, तब केवल आर्थिक गतिविधि ही नहीं रुकती, बल्कि शासन की वैधता भी प्रभावित होती है। IMF की श्रीलंका संबंधी रिपोर्टें स्पष्ट करती हैं कि 2022 तक आते-आते बाहरी ऋण, सीमित नीति-विकल्प और भुगतान-संकट ने देश की आर्थिक स्थिति को अत्यंत गंभीर बना दिया था [10]।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

विश्व बैंक की रिपोर्टें (2025) यह दिखाती हैं कि बाद के वर्षों में कुछ स्थिरीकरण संकेतक उभरे, जैसे मुद्रास्फीति में गिरावट, विदेशी मुद्रा भंडार में सुधार और ऋण-प्रबंधन की दिशा में कुछ प्रगति [1]। लेकिन यह स्थिरीकरण केवल आंशिक था। इसके साथ यह प्रश्न भी जुड़ा रहा कि क्या संकट के बाद देश अपनी बुनियादी सेवाओं और संस्थागत क्षमता को पुनर्निर्मित कर पाएगा।

विकास साझेदारी संबंधी साहित्य (2022) यह इंगित करता है कि यदि संकट-कालीन सहायता आगे चलकर दीर्घकालीन क्षमता-निर्माण में बदल जाए, तो उसका प्रभाव अधिक स्थायी होता है। ODI ने श्रीलंका के उदाहरण में भारत की 2022 की सहायता को उभरते हुए क्षेत्रीय दाता-व्यवहार का महत्त्वपूर्ण मामला माना है [11]। राजनीतिक विज्ञान के लिए यह इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ सहायता केवल आर्थिक मदद नहीं रहती; वह क्षेत्रीय प्रभाव, विश्वास-निर्माण और रणनीतिक उपस्थिति का माध्यम भी बन जाती है।

ऊर्जा क्षेत्र का साहित्य (2024, 2025) दिखाता है कि संकट के बाद ऊर्जा-नीति केवल आर्थिक प्रबंधन का विषय नहीं रहती, बल्कि घरेलू राजनीति का भी संवेदनशील प्रश्न बन जाती है। बिजली शुल्क, लागत-वसूली, निजी निवेश और जनता पर आर्थिक बोझ जैसे मुद्दे राजनीतिक विवाद को जन्म देते हैं। रॉयटर्स की रिपोर्टों में 2024 में बिजली शुल्क में प्रस्तावित कटौती और 2025 में अदानी समूह के पवन ऊर्जा निवेश से पीछे हटने की खबरें इसी जटिलता को दर्शाती हैं [12], [13]।

डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर (2024) संबंधी साहित्य यह मानता है कि सीमा-पार भुगतान प्रणालियाँ लेन-देन की लागत कम कर सकती हैं, पर्यटन और छोटे व्यापार को औपचारिक बना सकती हैं, तथा राज्य की सेवा-क्षमता को बढ़ा सकती हैं। श्रीलंका में UPI की शुरुआत को इसी रूप में देखा गया [7], [8], [14]। वहीं डिजिटल पहचान (SLUDI) परियोजना को भारत–श्रीलंका डिजिटल सहयोग के एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ के रूप में प्रस्तुत किया गया है [15], [16]।

स्वास्थ्य क्षेत्र के संदर्भ में संकट-कालीन सहायता का महत्व और अधिक प्रत्यक्ष हो जाता है। दवाइयों की कमी, अस्पतालों की आपूर्ति बाधित होना और आपातकालीन सेवाओं पर संकट, "मानवीय सुरक्षा" का प्रश्न बन जाते हैं। इस संदर्भ में भारत द्वारा दवा-सहायता, विशेषकर फ्यूरोसेमाइड इंजेक्शन की आपूर्ति, केवल दान नहीं बल्कि संकटग्रस्त स्वास्थ्य तंत्र को सहारा देने की कार्रवाई के रूप में देखी जा सकती है [9]।

इन्हीं विचारों के आधार पर यह शोधपत्र तीन-स्तरीय विश्लेषणात्मक ढाँचा अपनाता है:

1. पहला, स्थिरीकरण, जिसमें विदेशी मुद्रा संकट, आयात अंतराल और आवश्यक सेवाओं की निरंतरता प्रमुख हैं;
2. दूसरा, लचीलापन-निर्माण, जिसमें ऊर्जा विविधीकरण, डिजिटल भुगतान और स्वास्थ्य आपूर्ति सुरक्षा शामिल हैं;

© Copyright @ Authors

3. तीसरा, रणनीतिक राजनीतिक अर्थशास्त्र, जिसमें घरेलू स्वीकार्यता, निवेश-जोखिम, नियामकीय स्थिरता और संप्रभुता-संबंधी प्रश्न आते हैं।

3. पद्धति और डेटा-स्रोत

यह अध्ययन मुख्यतः दस्तावेज़-आधारित है और परियोजना-स्तरीय केस-विश्लेषण की पद्धति अपनाता है। 2022 में भारत द्वारा श्रीलंका को दी गई सहायता के स्वरूप और मात्रा के लिए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के आधिकारिक संसदीय उत्तर का उपयोग किया गया है [4]।

श्रीलंका की व्यापक आर्थिक स्थिति के विश्लेषण के लिए विश्व बैंक की विकास अद्यतन रिपोर्टों से मुद्रास्फीति, विदेशी मुद्रा भंडार और अर्थव्यवस्था के अन्य प्रमुख संकेतक लिए गए हैं [1]। मुद्रास्फीति के चरम स्तर की पुष्टि श्रीलंका के केंद्रीय बैंक के आधिकारिक नोटिस से की गई है [2]। विदेशी मुद्रा भंडार में सुधार की पुष्टि CBSL की अक्टूबर 2024 की बाह्य क्षेत्र प्रदर्शन रिपोर्ट से की गई है, जिसमें सकल आधिकारिक भंडार US$ 6.5 बिलियन दर्ज किया गया है [17]।

ऊर्जा क्षेत्र के विश्लेषण के लिए भारतीय उच्चायोग, NTPC और रॉयटर्स की रिपोर्टों का उपयोग किया गया है [5], [6], [18], [13]। डिजिटलीकरण क्षेत्र में UPI की शुरुआत के लिए भारतीय उच्चायोग और प्रेस सूचना ब्यूरो प्राथमिक स्रोत हैं [7], [8]। LankaPay–PhonePe सहयोग से संबंधित जानकारी LankaPay के आधिकारिक स्रोत से ली गई है [19]। SLUDI के संदर्भ में News On Air और ORF के विश्लेषण का उपयोग किया गया है [16], [15]। स्वास्थ्य क्षेत्र में औषधि सहायता के लिए भारतीय उच्चायोग की आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति को प्राथमिक स्रोत माना गया है [9]।

इस प्रकार अध्ययन में प्रयुक्त स्रोत मुख्यतः आधिकारिक दस्तावेज़, संस्थागत रिपोर्टें और विश्वसनीय समाचार माध्यमों पर आधारित हैं। इससे यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है कि विश्लेषण केवल वर्णनात्मक न रहे, बल्कि प्रामाणिक सूचनाओं पर आधारित हो।

4. संकट के बाद मैक्रो-संदर्भ: अत्यधिक अस्थिरता से स्थिरीकरण तक

2022 में श्रीलंका की समस्या केवल ऊँची मुद्रास्फीति तक सीमित नहीं थी। वास्तविक संकट भुगतान-क्षमता, विदेशी मुद्रा की उपलब्धता और आवश्यक आयातों की निरंतरता का था। विश्व बैंक के अनुसार सितंबर 2022 में 69.8% रही हेडलाइन मुद्रास्फीति दिसंबर 2023 तक घटकर 4% रह गई [1]। श्रीलंका के केंद्रीय बैंक ने भी सितंबर 2022 के लिए 69.8% की दर की पुष्टि की थी [2]।

मुद्रास्फीति में यह कमी कई कारकों का परिणाम थी, जिनमें IMF कार्यक्रम, नीतिगत संयम, घरेलू मांग में गिरावट और विनिमय दर की कुछ स्थिरता शामिल थी [3], [10]। फिर भी यह गिरावट अपने आप में पूर्ण सुधार का संकेत नहीं थी।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

विदेशी मुद्रा भंडार के मोर्चे पर भी कुछ सुधार दर्ज किया गया। विश्व बैंक ने बताया कि 2023 के अंत तक उपयोगी भंडार आयात के 2.1 महीनों के बराबर पहुँच गया था [1]। CBSL की अक्टूबर 2024 की रिपोर्ट के अनुसार उस समय तक सकल आधिकारिक भंडार US$ 6.5 बिलियन तक पहुँच चुका था, जो पिछले वर्ष की तुलना में बेहतर स्थिति को दर्शाता है [17]।

राजनीतिक दृष्टि से यह परिवर्तन महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि मैक्रो-आर्थिक स्थिरीकरण के बिना किसी भी बड़े ऊर्जा निवेश, डिजिटल भुगतान नेटवर्क या स्वास्थ्य आयात प्रणाली का सुचारु संचालन संभव नहीं है। इसलिए 2022 के बाद के भारत–श्रीलंका संबंधों को समझने के लिए यह देखना आवश्यक है कि तत्काल राहत और बाद की परियोजनाओं के बीच यह आर्थिक स्थिरीकरण किस प्रकार से सेतु का कार्य करता है।

इस पृष्ठभूमि में भारत की भूमिका दो स्तरों पर सामने आती है। पहला, 2022 में तत्काल तरलता और आयात-सहायता प्रदान करना; दूसरा, 2023–2025 के बीच परियोजना-आधारित क्षमता-निर्माण में भाग लेना। यही इस शोधपत्र का केंद्रीय विश्लेषण बिंदु है।

5. भारतीय सहायता: 2022 का स्थिरीकरण पैकेज और उसके तंत्र

विदेश मंत्रालय के आधिकारिक उत्तर के अनुसार भारत ने 2022 में श्रीलंका के लिए कई महत्त्वपूरण सहायता-उपकरण उपलब्ध कराए। इनमें US$ 400 मिलियन का करेंसी स्वैप, लगभग US$ 2 बिलियन का ACU सेटलमेंट स्थगन, ईंधन आयात के लिए US$ 500 मिलियन की लाइन ऑफ क्रेडिट, और आवश्यक वस्तुओं के लिए US$ 1 बिलियन की क्रेडिट सुविधा शामिल थी [4]।

इन उपायों की प्रकृति से स्पष्ट है कि सहायता का उद्देश्य केवल नकद सहयोग देना नहीं था। इसका मुख्य लक्ष्य भुगतान-व्यवस्था को बनाए रखना, ईंधन और आवश्यक वस्तुओं के आयात को जारी रखना और तत्काल आर्थिक घबराहट को कम करना था। ODI ने भी 2022 में भारत की इस सहायता को उभरते दाता-व्यवहार के एक महत्वपूर्ण उदाहरण के रूप में देखा [11]।

राजनीतिक अर्थशास्त्र के स्तर पर इस पैकेज का अर्थ और भी गहरा है। संकट की स्थिति में किसी बाहरी सहयोगी द्वारा त्वरित और लक्षित सहायता केवल आर्थिक राहत नहीं देती, बल्कि राज्य को "समय" भी देती है। यही समय शासन को सामाजिक असंतोष कम करने, आपूर्ति तंत्र को संभालने और प्रशासनिक ढाँचे को टूटने से बचाने में मदद करता है।

इसके साथ ही, ऐसी सहायता बाद के वर्षों में परियोजना-आधारित सहयोग की बुनियाद भी बनती है। संकट-काल में जिन भागीदारों ने विश्वसनीयता के साथ सहयोग किया, बाद की सरकारें प्रायः उन्हीं के साथ दीर्घकालीन परियोजनाएँ विकसित करने में अधिक सहज होती हैं। इस अर्थ में 2022 का भारतीय सहायता-पैकेज केवल राहत नहीं था, बल्कि भविष्य की आर्थिक साझेदारी का आधार भी था।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

सारणी 1: 2022 में भारत के प्रमुख सहायता-उपकरण [4]

सहायता-उपकरण	राशि (US$)	नीति-उद्देश्य
SAARC फ्रेमवर्क करेंसी स्वैप	0.4 बिलियन	तात्कालिक फॉरेक्स तरलता
ACU सेटलमेंट डिफरल	~2.0 बिलियन	आयात भुगतान में राहत
ईंधन लाइन ऑफ क्रेडिट	0.5 बिलियन	पेट्रोलियम आयात निरंतरता
आवश्यक वस्तुओं हेतु क्रेडिट सुविधा	1.0 बिलियन	भोजन/दवा/अन्य आवश्यक आयात

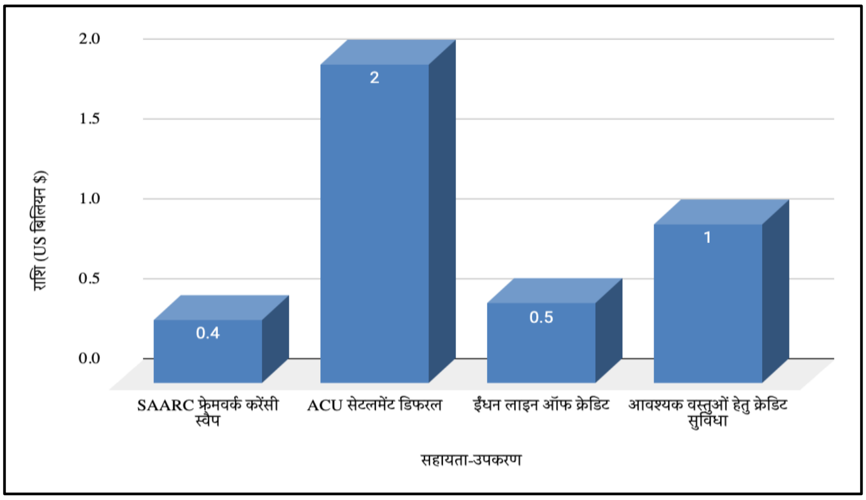

चित्र 1: 2022 में भारत के प्रमुख सहायता-उपकरण के अंतर्गत राशि

यदि इन चार सहायता-उपकरणों को तुलनात्मक रूप से देखा जाए, तो स्पष्ट होता है कि ACU डिफरल और US$ 1 बिलियन की क्रेडिट सुविधा सबसे बड़े घटक थे, जबकि स्वैप और ईंधन लाइन ऑफ क्रेडिट अपेक्षाकृत छोटे लेकिन अत्यंत रणनीतिक उपकरण थे [4]।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि किसी सहायता-उपकरण का मूल्यांकन केवल उसकी राशि से नहीं किया जाना चाहिए। उससे अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि संकट की घड़ी में वह किस बाधा को हल करता है और कितनी त्वरित राहत प्रदान करता है। यही कारण है कि पोस्ट-क्राइसिस सहयोग को परियोजना-स्तर पर समझना अधिक उपयोगी सिद्ध होता है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

6. ऊर्जा क्षेत्र: ईंधन आपातकाल से नवीकरणीय और लॉजिस्टिक क्षमता तक

ऊर्जा क्षेत्र 2022 के संकट का सबसे स्पष्ट और प्रत्यक्ष आयाम था। ईंधन की कमी ने परिवहन, बिजली उत्पादन और आर्थिक गतिविधियों को गंभीर रूप से प्रभावित किया। यही कारण है कि संकट के बाद ऊर्जा सहयोग भारत–श्रीलंका संबंधों का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बन गया।

रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार जनवरी 2022 में श्रीलंका ने इंडियन ऑयल के साथ त्रिंकोमाली तेल टैंक फार्म के उपयोग और विकास को लेकर समझौता किया [18]। यह केवल भंडारण क्षमता बढ़ाने का प्रश्न नहीं था। इसके पीछे रणनीतिक महत्व भी जुड़ा है, क्योंकि तेल भंडारण और आपूर्ति-लॉजिस्टिक्स संकट-काल में ऊर्जा सुरक्षा का मूल आधार बन जाते हैं। ऐसे ढाँचे क्षेत्रीय आपूर्ति प्रबंधन और आपातकालीन प्रतिक्रिया दोनों में भूमिका निभा सकते हैं।

दूसरा महत्त्वपूर्ण क्षेत्र ऑफ-ग्रिड और द्वीपीय नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं का है। भारतीय उच्चायोग के अनुसार डेल्फ़्ट, नैनाटिव्यू और अनलैटिव्यू द्वीपों पर हाइब्रिड पावर परियोजनाओं के लिए US$ 11 मिलियन की अनुदान सहायता उपलब्ध कराई गई और उनकी कुल क्षमता 2,230 किलोवाट बताई गई [5]। इन परियोजनाओं का महत्व केवल ऊर्जा उत्पादन में नहीं, बल्कि स्थानीय स्तर पर विश्वसनीय सेवा-प्रदान और जीवन-स्तर सुधार में भी है। संकट के बाद ऐसी परियोजनाएँ राज्य की सेवा-क्षमता और सामाजिक भरोसे को पुनर्स्थापित करने में मदद करती हैं।

तीसरा आयाम ग्रिड-स्तरीय सौर परियोजनाओं का है। NTPC की आधिकारिक सूचना के अनुसार सम्पूर सोलर परियोजना के लिए 5.97 अमेरिकी सेंट प्रति यूनिट का अंतिम टैरिफ निर्धारित किया गया [6]। यह केवल तकनीकी या व्यावसायिक उपलब्धि नहीं है। ऊर्जा टैरिफ का प्रश्न सार्वजनिक स्वीकृति, नियामकीय स्थिरता और निवेश-विश्वास से जुड़ा होता है, विशेषकर ऐसे देश में जहाँ हाल के वर्षों में बिजली दरों में वृद्धि जन-असंतोष का कारण रही हो [12]।

इसी संदर्भ में निजी निवेश की चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। 2025 में अदानी समूह द्वारा श्रीलंका की पवन ऊर्जा परियोजनाओं से हटने की खबर यह संकेत देती है कि पोस्ट-क्राइसिस निवेश वातावरण अभी भी राजनीतिक और नियामकीय रूप से संवेदनशील है [13]। इससे यह स्पष्ट होता है कि सरकारी या अनुदान-आधारित परियोजनाएँ अपेक्षाकृत अधिक स्थिर हो सकती हैं, जबकि निजी निवेश घरेलू राजनीति, अनुबंध शर्तों और टैरिफ विवादों से अधिक प्रभावित होता है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

सारणी 2: 2022 के बाद ऊर्जा क्षेत्र में प्रमुख भारत-सम्बद्ध परियोजनाएँ/उपक्रम

परियोजना/उपक्रम	**प्रकृति**	**क्षमता/परिमाण**	**वित्त/शर्तें (रिपोर्टेड)**
त्रिंकोमाली तेल टैंक फार्म [18]	पेट्रोलियम लॉजिस्टिक्स/भंडारण	99 टैंक परिसर (लीज/विकास ढाँचा)	समझौता रिपोर्ट
डेल्फ़्ट–नैनाटिव्यू–अनलैटिव्यू हाइब्रिड [5]	ऑफ-ग्रिड/हाइब्रिड रिन्यूएबल	2,230 kW	US$ 11M ग्रांट
सम्पूर सोलर (त्रिंकोमाली) [6]	ग्रिड सौर	टैरिफ 5.97 US¢/kWh	JV/टैरिफ फाइनल
मन्नार–पुनेरिन वायु (अदानी) [13]	निजी पवन निवेश	484 MW (रिपोर्टेड)	विवाद/withdraw रिपोर्ट

ऊर्जा क्षेत्र के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि 2022 में भारत की ऊर्जा-संबंधी सहायता तत्काल जीवन-रेखा की तरह काम कर रही थी [4]। लेकिन 2023–2025 के बीच इस सहयोग का स्वरूप ऊर्जा-विविधीकरण, स्थानीय सेवा-विश्वसनीयता और दीर्घकालीन अवसंरचना निर्माण की दिशा में बढ़ा [5], [6]। फिर भी यह क्षेत्र अभी भी राजनीतिक रूप से संवेदनशील है, क्योंकि ऊर्जा-टैरिफ और निजी निवेश के प्रश्न घरेलू विवादों से गहराई से जुड़े रहते हैं [12], [13]।

7. डिजिटलीकरण: भुगतान कनेक्टिविटी और डिजिटल पहचान

संकट के बाद डिजिटलीकरण ऐसा क्षेत्र बनकर उभरा जहाँ अपेक्षाकृत कम भौतिक निवेश के साथ राज्य-क्षमता और आर्थिक सुविधा दोनों को तेज़ी से बढ़ाया जा सकता है।

12 फरवरी 2024 को भारतीय उच्चायोग की प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार श्रीलंका में UPI सेवाओं की शुरुआत की गई [7]। प्रेस सूचना ब्यूरो ने भी इसे भारत की डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षमता के क्षेत्रीय विस्तार के रूप में प्रस्तुत किया [8]। इस पहल का मुख्य उद्देश्य सीमा-पार भुगतान को सरल बनाना, पर्यटन से जुड़े लेन-देन को सुविधाजनक करना और छोटे व्यापारियों को डिजिटल भुगतान ढाँचे से जोड़ना था।

EconomyNext की रिपोर्ट ने इसे विशेष रूप से भारतीय पर्यटकों के लिए उपयोगी बताया, क्योंकि वे LankaQR स्वीकार करने वाले व्यापारियों को सीधे UPI के माध्यम से भुगतान कर सकते हैं [14]। इससे नकद पर निर्भरता कम होती है, भुगतान की पारदर्शिता बढ़ती है और छोटे व्यापारों का औपचारिकरण संभव होता है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

LankaPay और PhonePe की साझेदारी [19] इस प्रक्रिया को तकनीकी और संस्थागत आधार प्रदान करती है। इसका अर्थ यह है कि UPI केवल एक औपचारिक घोषणा नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक भुगतान-इकोसिस्टम का हिस्सा है जिसमें इंटरऑपरेबिलिटी, व्यापारी-स्वीकृति और उपयोगकर्ता-अनुभव तीनों शामिल हैं।

डिजिटल पहचान परियोजना SLUDI का महत्व इससे भी अधिक व्यापक है। News On Air के अनुसार भारत ने श्रीलंका की डिजिटल पहचान परियोजना के लिए 45 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की [16]। ORF ने इसे भारत–श्रीलंका डिजिटल साझेदारी का एक केंद्रीय तत्व माना है [15]।

राजनीतिक दृष्टि से डिजिटल पहचान राज्य को लक्षित कल्याण योजनाओं, पहचान सत्यापन, सेवा-वितरण और प्रशासनिक दक्षता में सुधार का अवसर देती है। संकट के बाद जब राज्य अपनी संस्थागत विश्वसनीयता को पुनर्निर्मित करना चाहता है, तब ऐसी परियोजनाएँ विशेष महत्व रखती हैं। हालाँकि इसके साथ डेटा-सुरक्षा, निजता, तकनीकी निर्भरता और शासन-संबंधी प्रश्न भी जुड़े रहते हैं, जिन्हें नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

सारणी 3: पोस्ट-क्राइसिस डिजिटल साझेदारी के प्रमुख संकेतक

पहल	**वर्ष**	**प्रमुख तथ्य**
UPI गो-लाइव [7]	2024	12 Feb 2024 को सेवाएँ लॉन्च
DPI फ्रेमिंग (भारत) [8]	2024	UPI लॉन्च पर आधिकारिक बयान/संदर्भ
LankaPay–PhonePe [19]	2024	LankaQR पर UPI भुगतान स्वीकार्यता बढ़ाने हेतु साझेदारी
UPI और पर्यटन/औपचारिकीकरण [14]	2024	भारतीय पर्यटकों के लिए LankaQR पर UPI भुगतान
SLUDI हेतु भारतीय सहायता [16]	2023	Rs 45 करोड़ सहायता (रिपोर्टेड)
SLUDI नीति विश्लेषण [15]	2025	SLUDI को DPI सहयोग का केंद्रबिंदु

डिजिटलीकरण क्षेत्र का समग्र निष्कर्ष यह है कि यह सहयोग कम लेन-देन लागत, अधिक औपचारिकता और बेहतर राज्य-क्षमता के त्रिकोण पर आधारित है [7], [14], [15]। पोस्ट-क्राइसिस अर्थव्यवस्था में यह मॉडल विशेष रूप से आकर्षक बन जाता है, क्योंकि यह सीमित संसाधनों में अपेक्षाकृत तेज़ प्रशासनिक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

8. स्वास्थ्य क्षेत्र: लक्षित औषधि सहायता और मानवीय सुरक्षा

2022 के आर्थिक संकट ने श्रीलंका की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली की कमजोरियों को स्पष्ट रूप से उजागर कर दिया। चूँकि देश चिकित्सा आपूर्ति के लिए बड़े पैमाने पर आयात पर निर्भर है, इसलिए विदेशी मुद्रा संकट का सीधा प्रभाव दवाओं, अस्पताल उपकरणों और आपातकालीन सेवाओं पर पड़ा। परिणामस्वरूप स्वास्थ्य संकट केवल चिकित्सा समस्या नहीं रहा, बल्कि मानवीय सुरक्षा का प्रश्न बन गया।

इसी संदर्भ में भारत की स्वास्थ्य-संबंधी सहायता का विशेष महत्व है। 13 मार्च 2025 को भारतीय उच्चायोग ने बताया कि श्रीलंका सरकार के तत्काल अनुरोध पर भारत ने 24 घंटे के भीतर 50,000 फ्यूरोसेमाइड इंजेक्शन एंप्यूल उपलब्ध कराए [9]। यह दवा हृदय विफलता और एडिमा जैसे गंभीर रोग-स्थितियों में प्रयुक्त होती है, इसलिए इसकी कमी सीधे रोगी-जीवन को प्रभावित कर सकती थी।

यह घटना इस बात का प्रमाण है कि व्यापक आर्थिक स्थिरीकरण के संकेत मिलने के बाद भी स्वास्थ्य क्षेत्र की आपूर्ति-श्रृंखलाएँ पूरी तरह मजबूत नहीं हुई थीं। अस्पताल-स्तर पर दवा की कमी यह दर्शाती है कि आयात भुगतान, खरीद-प्रक्रिया और वितरण-प्रबंधन में अभी भी गंभीर कमजोरियाँ थीं।

राजनीतिक अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से भारत की स्वास्थ्य सहायता को दो स्तरों पर समझा जा सकता है।

1. पहला, 2022 की US$ 1 बिलियन की क्रेडिट सुविधा, जिसके माध्यम से दवाइयों और अन्य आवश्यक वस्तुओं के आयात को समर्थन मिला [4]। यह व्यापक स्तर की सहायता थी, जिसने पूरे स्वास्थ्य तंत्र को तत्काल गिरावट से बचाने में योगदान दिया।
2. दूसरा, 2025 जैसे मामलों में लक्षित सहायता, जहाँ किसी विशेष दवा या वस्तु की कमी को तुरंत पूरा किया गया [9]। ऐसी सहायता केवल प्रशासनिक सहयोग नहीं होती; इसका प्रतीकात्मक और कूटनीतिक महत्व भी होता है। यह जनता और राज्य दोनों के बीच भारत की छवि को एक विश्वसनीय और त्वरित सहयोगी के रूप में स्थापित करती है।

सारणी 4: स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रमुख भारत-सम्बद्ध सहायता संकेतक

मद	वर्ष	परिमाण	उद्देश्य
फ्यूरोसेमाइड इंजेक्शन एंप्यूल दान [9]	2025	50,000 एंप्यूल	अस्पतालों में तत्काल कमी की पूर्ति
आवश्यक आयात क्रेडिट सुविधा (दवाइयाँ सहित) [4]	2022	US$ 1.0B	भोजन/दवा/आवश्यक वस्तुओं का आयात

© Copyright @ Authors

स्रोत: भारतीय उच्चायोग, कोलंबो प्रेस विज्ञप्ति (2025) और विदेश मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट [4], [9]। डेटा भारत की बहुस्तरीय स्वास्थ्य कूटनीति को दर्शाता है।

स्वास्थ्य क्षेत्र के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारत की भूमिका केवल वित्तीय सहयोग तक सीमित नहीं रही। यह मानवीय सुरक्षा के क्षेत्र में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के रूप में भी सामने आई। पोस्ट-क्राइसिस स्थिति में जहाँ राज्य अपनी सीमाओं से जूझ रहा था, भारत ने उस रिक्ति को आंशिक रूप से भरा। इस प्रकार भारत की स्वास्थ्य सहायता को केवल दान नहीं, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता और मानवीय सुरक्षा के एक महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में देखा जा सकता है [9]।

9. तुलनात्मक चर्चा

ऊर्जा, डिजिटलीकरण और स्वास्थ्य—इन तीनों क्षेत्रों का तुलनात्मक अध्ययन एक साझा पैटर्न को सामने लाता है। 2022 के संकट के दौरान भारत की त्वरित सहायता ने भरोसे की एक बुनियाद तैयार की। बाद के वर्षों में यही भरोसा परियोजना-आधारित सहयोग में बदलता दिखाई देता है।

फिर भी तीनों क्षेत्रों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था एक जैसी नहीं है। ऊर्जा क्षेत्र सबसे अधिक विवाद-संवेदनशील है। छोटे और अनुदान-आधारित प्रोजेक्ट, जैसे द्वीपीय हाइब्रिड ऊर्जा योजनाएँ, अपेक्षाकृत अधिक सामाजिक स्वीकृति प्राप्त कर सकती हैं क्योंकि उनका लाभ सीधे स्थानीय समुदाय को मिलता है [5]। लेकिन बड़े ग्रिड-स्तरीय निवेश टैरिफ, लागत-वसूली और नियामकीय स्थिरता पर निर्भर करते हैं [6], [12]। इसी वजह से निजी निवेश, जैसा कि अदानी मामले से स्पष्ट हुआ, राजनीतिक विवाद और अनुबंध-संबंधी जोखिम के प्रति अधिक संवेदनशील रहता है [13]।

डिजिटलीकरण का क्षेत्र अपेक्षाकृत कम प्रतिरोध वाला प्रतीत होता है। UPI जैसी प्रणालियाँ आम उपभोक्ता, व्यापारी और पर्यटन क्षेत्र को त्वरित सुविधा देती हैं [7], [14]। इससे राज्य को भी अधिक औपचारिक और ट्रैसेबल आर्थिक गतिविधि का लाभ मिलता है। फिर भी डिजिटल पहचान जैसी परियोजनाओं में डेटा-शासन, निजता और तकनीकी निर्भरता जैसे प्रश्न उठ सकते हैं [15], [16]। इसलिए यहाँ सफलता केवल तकनीकी विस्तार से नहीं, बल्कि संस्थागत विश्वास से भी जुड़ी है।

स्वास्थ्य क्षेत्र सबसे कम राजनीतिक विवाद वाला लेकिन सबसे अधिक मानवीय संवेदनशील क्षेत्र है। यहाँ सहयोग की वैधता अधिक है, क्योंकि दवा और अस्पताल सहायता सीधे जन-जीवन से जुड़ी होती है। फिर भी इस क्षेत्र की चुनौतियाँ संरचनात्मक हैं। यदि स्थिरीकरण के बाद भी अस्पतालों में आवश्यक दवाओं की कमी बनी रहती है, तो इसका अर्थ है कि केवल बाहरी सहायता पर्याप्त नहीं है; आपूर्ति-श्रृंखला, खरीद-प्रक्रिया और वितरण में संस्थागत सुधार की आवश्यकता बनी रहती है [9], [1]।

© Copyright @ Authors

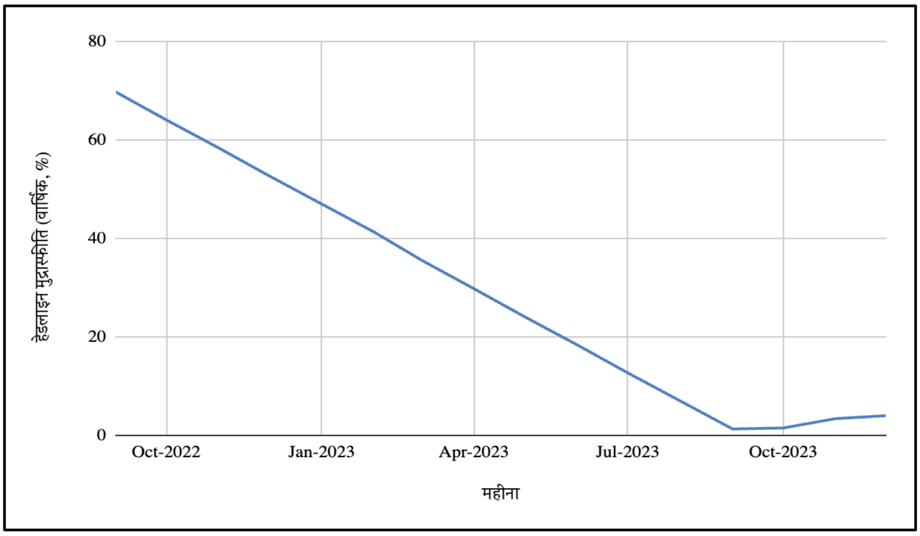

चित्र 2: मुद्रास्फीति में तीव्र गिरावट

विश्व बैंक के अनुसार श्रीलंका में हेडलाइन मुद्रास्फीति सितंबर 2022 के 69.8% से दिसंबर 2023 में 4% तक गिर गई [1]। इस परिवर्तन को यदि एक सरल रेखा-चित्र के रूप में देखा जाए, तो यह पोस्ट-क्राइसिस स्थिरीकरण का स्पष्ट दृश्य संकेत देता है। यह भी दर्शाता है कि 2024–2025 तक आते-आते निवेश और परियोजनाओं के लिए वातावरण 2022 की तुलना में कहीं अधिक स्थिर हो चुका था, भले ही सामाजिक स्मृति और मूल्य-संवेदनशीलता अभी भी बनी हुई थी [12]। तुलनात्मक स्तर पर कहा जा सकता है कि तीनों क्षेत्रों में भारत–श्रीलंका सहयोग का आधार एक ही है, संकट से उबरने में सहारा देना, लेकिन प्रत्येक क्षेत्र की संस्थागत और राजनीतिक जटिलताएँ अलग-अलग हैं।

10. निष्कर्ष

यह शोधपत्र यह स्पष्ट करता है कि 2022 के बाद भारत–श्रीलंका आर्थिक संबंधों को केवल राहत या केवल निवेश की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। वास्तव में यह संबंध दो चरणों में विकसित हुआ दिखाई देता है। पहले चरण में भारत की सहायता, जैसे करेंसी स्वैप, ACU डिफरल, ईंधन लाइन ऑफ क्रेडिट और आवश्यक वस्तुओं के लिए क्रेडिट सुविधाओं ने तत्काल आर्थिक स्थिरीकरण और आयात-निरंतरता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दूसरे चरण में यही सहयोग ऊर्जा, डिजिटलीकरण और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में परियोजना-आधारित क्षमता-निर्माण में बदलता दिखाई देता है। ऊर्जा क्षेत्र में द्वीपीय हाइब्रिड परियोजनाएँ, सौर निवेश और तेल-भंडारण पहलें सामने आती हैं। डिजिटलीकरण के क्षेत्र में UPI आधारित भुगतान कनेक्टिविटी और SLUDI जैसी डिजिटल पहचान परियोजनाएँ उभरती हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में लक्षित औषधि सहायता और आपूर्ति समर्थन मानवीय सुरक्षा को सहारा देते हैं।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

ऊर्जा क्षेत्र का अनुभव यह दिखाता है कि बड़े निवेश तभी टिकाऊ बन सकते हैं जब नियामकीय स्थिरता, टैरिफ-संतुलन और सामाजिक स्वीकार्यता मौजूद हो। डिजिटलीकरण यह संकेत देता है कि सीमित भौतिक निवेश में भी राज्य-क्षमता और आर्थिक सुविधा दोनों को तेज़ी से बढ़ाया जा सकता है, पर इसके लिए डेटा-गवर्नेंस और संस्थागत विश्वास आवश्यक हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र यह सिखाता है कि मानवीय सहायता सबसे अधिक तात्कालिक और वैध होती है, लेकिन दीर्घकालीन स्थिरता के लिए स्थानीय आपूर्ति-श्रृंखला और प्रशासनिक सुधार अनिवार्य हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो पोस्ट-क्राइसिस भारत–श्रीलंका संबंधों की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि संकट-कालीन विश्वास अब "सिस्टम-अपग्रेड" में परिवर्तित हो रहा है। यह परिवर्तन ऊर्जा आपूर्ति की विश्वसनीयता, डिजिटल भुगतान की आधुनिकता और स्वास्थ्य आपूर्ति की निरंतरता के माध्यम से दिखाई देता है। यह प्रक्रिया केवल आर्थिक नहीं, बल्कि गहरी राजनीतिक प्रक्रिया भी है, क्योंकि इसकी सफलता घरेलू वैधता, नियामकीय विश्वास और संस्थागत समन्वय पर निर्भर करती है।

संदर्भ

1. विश्व बैंक. (23 अप्रैल 2025). *श्रीलंका विकास अद्यतन 2025.*
2. श्रीलंका का केंद्रीय बैंक. (30 सितंबर 2022). *सितंबर 2022 में मुद्रास्फीति (सी.सी.पी.आई.): हेडलाइन मुद्रास्फीति 69.8% दर्ज।*
3. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष. (20 मार्च 2023). *आई.एम.एफ. कार्यकारी बोर्ड द्वारा श्रीलंका के लिए विस्तारित निधि सुविधा (ई.एफ.एफ.) के अंतर्गत विस्तारित व्यवस्था को अनुमोदन।*
4. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय. (2 फरवरी 2023). *राज्यसभा प्रश्न संख्या 67: भारत और श्रीलंका के बीच राजनयिक संबंध।*
5. भारत का उच्चायोग, कोलंबो. (29 अगस्त 2024). *डेल्फ़्ट, नैनातिवु और अनलैतिवु द्वीपों में हाइब्रिड विद्युत परियोजनाओं हेतु प्रथम भुगतान का हस्तांतरण।*
6. एन.टी.पी.सी. लिमिटेड. (21 जनवरी 2025). *श्रीलंका में बड़े पैमाने की सौर पी.वी. विद्युत परियोजना के लिए एन.टी.पी.सी.–सी.ई.बी. संयुक्त उपक्रम द्वारा 'लैंडमार्क' टैरिफ का अंतिम निर्धारण।*
7. भारत का उच्चायोग, कोलंबो. (12 फरवरी 2024). *श्रीलंका में यू.पी.आई. सेवा आरंभ (गो-लाइव)*।
8. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार. (12 फरवरी 2024). *प्रधानमंत्री द्वारा (संयुक्त रूप से) यू.पी.आई. सेवाओं का उद्‌घाटन...*।

© Copyright @ Authors

9. भारत का उच्चायोग, कोलंबो. (13 मार्च 2025). *श्रीलंका के तत्काल अनुरोध पर भारत द्वारा फ्यूरोसेमाइड इंजेक्शन एंप्यूल्स का उपहार/दान*।

10. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष. (2023). *श्रीलंका: विस्तारित निधि सुविधा के अंतर्गत विस्तारित व्यवस्था हेतु अनुरोध* (आई.एम.एफ. स्टाफ कंट्री रिपोर्ट सं. 116/2023)।

11. ओ.डी.आई. (ओवरसीज डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट). (27 जुलाई 2022). *श्रीलंका के ऋण-संकट के संदर्भ में उभरता सहायता-दाता के रूप में भारत*।

12. रॉयटर्स. (21 फरवरी 2024). *मंत्री के अनुसार श्रीलंका नियामक के समक्ष 18% बिजली टैरिफ कटौती का प्रस्ताव रखेगा*।

13. रॉयटर्स. (13 फरवरी 2025). *अदानी द्वारा श्रीलंका की पवन ऊर्जा परियोजनाओं से हटने की घोषणा*।

14. इकोनॉमीनेक्स्ट. (12 फरवरी 2024). *श्रीलंका ने बढ़ते भारतीय पर्यटकों के भुगतान को सुगम बनाने हेतु यू.पी.आई. लॉन्च किया...*।

15. ऑब्ज़र्वर रिसर्च फाउंडेशन. (19 नवंबर 2025). *भारत–श्रीलंका आर्थिक संबंध: डिजिटल और वित्तीय साझेदारी का उदय*।

16. न्यूज़ ऑन एयर. (6 अगस्त 2023). *श्रीलंका की डिजिटल पहचान परियोजना के समर्थन हेतु भारत द्वारा 45 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता*।

17. श्रीलंका का केंद्रीय बैंक. (29 नवंबर 2024). *बाह्य क्षेत्र प्रदर्शन: अक्टूबर 2024*: अक्टूबर 2024)।

18. रॉयटर्स. (6 जनवरी 2022). *वित्तीय संकट के बीच श्रीलंका ने इंडियन ऑयल को तेल टैंकों के पट्टे/लीज हेतु समझौता किया*।

19. लंका-पे. (मई 2024). *फोनपे/लंका-पे साझेदारी का शुभारंभ (यू.पी.आई. उपयोगकर्ताओं हेतु लंका-क्यूआर स्वीकृति)*।

20. पी.वी. मैगज़ीन इंडिया. (21 जनवरी 2025). *श्रीलंका की सौर परियोजना के लिए एन.टी.पी.सी.–सी.ई.बी. संयुक्त उपक्रम द्वारा टैरिफ अंतिम (संदर्भ/सार)*।

© Copyright @ Authors